इकाई 5 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 अर्थ और परिभाषा

5.3 व्याख्यात्मक और सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र के बीच अंतर

5.4 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की उत्पत्ति

5.4.1 मैक्स वेबर

5.5 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की शाखाएँ

5.5.1 प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

5.5.1.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड का योगदान

5.5.1.2 हर्बर्ट ब्लूमर का योगदान

5.5.2 नाट्य-शास्त्र

5.5.3 दृश्य प्रपंच शास्त्र

5.5.4 जाति प्रणाली विज्ञान

5.6 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाएं

5.7 सारांश

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.9 संदर्भ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बातों के संदर्भ करने में सक्षम हो जाएंगे:

- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के अर्थ और प्रकृति के बारे में चर्चा हेतु;
- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र और सकारात्मकतावाद के बीच मुख्य अंतर जानने में;
- इस उपागम में मैक्स वेबर के योगदान का वर्णन करने में;
- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की अन्य शाखाओं के बारे में; तथा
- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाओं के बारे में जानने में।

5.1 प्रस्तावना

यह इकाई पांच भागों में विभाजित है। खंड 3 संक्षेप में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र अर्थ और प्रकृति का एक सामान्य चित्र प्रस्तुत करता है। भाग 4 के अंतर्गत सकारात्मकतावाद या सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र और व्याख्यावाद या व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के बीच मुख्य भिन्नताओं को सूचीबद्ध किया गया है। भाग 5 में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के क्षेत्र में मैक्स वेबर के योगदान के बारे में चर्चा की गई है, और अंततः भाग 6 में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की शाखाओं का एक समग्र खांके को प्रस्तुत किया गया है और वह भी विभिन्न

*यह इकाई प्रो. सुभद्रा चन्ना के द्वारा लिखी गई है।

विचारकों और उनके मुख्य विचारों एवं उनके महत्वपूर्ण कार्यों को ध्यान में रखते हुए। यह इकाई इस उपागम अर्थात व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाओं की चर्चा के साथ और अंततः मुख्य विचारों से संबंधित सारांश के साथ खत्म हुआ है।

5.2 अर्थ और परिभाषा

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र उन अर्थों पर प्रकाश डालता है जिन्हें लोग अपनी सामाजिक दुनिया से जोड़ते हैं। यह दर्शाता है कि लोग अपने दैनिक जीवन में स्वयं वास्तविकता का निर्माण करते हैं। चूंकि समाजशास्त्र को एक अनुशासन के रूप में फ्रांसीसी दार्शनिक अगस्ट कॉम्टे द्वारा 19 वीं शताब्दी में स्थापित किया गया इसलिए समाज का अध्ययन विभिन्न तरीकों से विकसित हुआ है। कॉम्टे के पसंदीदा प्रत्यक्षवादी दर्शन में समाजशास्त्र का प्रारंभिक उदय गहराई से अंतर्निहित है जो समाज का अध्ययन करने हेतु वैज्ञानिक तरीकों और तकनीकों पर निर्भर था। सकारात्मकता के विकल्प के रूप में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का विकास हुआ। (हम इनके बीच के अंतर को खंड 4 में समझेंगे - देखेंगे)।

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र को समाज के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि उन अर्थों की खोज करने पर बल देता है जिन्हें लोग अपनी सामाजिक दुनिया से जोड़ते हैं। समाजशास्त्र के क्षेत्र में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसे आम तौर पर 'समझ' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि वर्स्टेहन (जर्मन शब्द जिसका अर्थ है 'मानव व्यवहार की सहानुभूतिपूर्ण समझ') अवधारणा में निहित है।यह एक उपागम है जो सामाजिक व्यवहार और अंतःक्रिया का अध्ययन करते समय अर्थ और क्रिया के महत्व को केंद्र में रखता है। यह उपागम सकारात्मक समाजशास्त्र के माध्यम से यह जानता है कि व्यक्तिपरक अनुभव, विश्वास और लोगों का व्यवहार इस बात के आंतरिक पहलू हैं कि हम किस बात का निरीक्षण करते हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो विशुद्ध रूप से उद्देश्यपरक घटना जैसी कोई बात नहीं होती है। सहज सरल शब्दों में यह कह सकते हैं कि यह उपागम हमें जानकारी देता है कि समाज और सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने और समझने के लिए हमें 'दूसरे के जीवन को देखना समझना चाहिए क्योंकि बाहर से कुछ भी जान पाना संभव नहीं है। इस अवधारणा को समझने के लिए आइए हम निम्नलिखित उदाहरण को देखते हैं और इस प्रकार से यह एक बेहतर और आसान तरीका है। उदाहरण स्वरूप बॉक्स 1 को देखें।

बॉक्स 1

प्रेरकों की तर्कसंगत समझ व्याख्यात्मक समाजशास्त्र सम्मिलित होता है। उद्देश्य के संदर्भ में मैक्स वेबर (1978) ने सुझाव दिया कि हम 'लकड़ी की कटाई' अथवा 'बंदूक के लक्ष्य' को जानते-समझते हैं। हम जानते हैं कि लकड़हाड़ा मजदूरी के लिए यह कार्य कर रहा है और वह भी अपने खुद के उपयोग के लिए अथवा संभवतः वह यह कार्य पुनः सृजन हेतु कर रहा है। परंतु वह फिट ऑफ रेज (तर्कहीन मामला) के माध्यम से भी यह कार्य कर सकता है।

इसी प्रकार हम किसी व्यक्ति के बंदूक से निशाना साधने के मकसद को तब समझते हैं जब हम यह जानते हैं कि उसे किसी फायरिंग दस्ते के सदस्य के रूप में गोली चलाने की आज्ञा दी गई है चूंकि वह किसी दुश्मन के विरुद्ध लड़ रहा है, अथवा वह बदला लेने के लिए ऐसा कर रहा है (वेबर, 1978: 8-9)।

गतिविधि 1

बॉक्स 1 के उदाहरण को ध्यान से पढ़ें जो वर्स्टेन के मुख्य विचार से संबन्धित है। इस बारे में आप अपने मित्रों अथवा परिवार के सदस्यों के साथ चर्चा करें और देखें कि क्या आप अपने रोजमर्रा के जीवन से इस प्रकार के उदाहरण ढूंढ सकते हैं। यदि संभव हो तो अपने स्टडी सेंटर पर दूसरे छात्रों के नोट्स के साथ अपने खुद के नोट्स की तुलना करें।

5.3 सकारात्मकतावादी और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के बीच अंतर

प्रत्यक्षवादी और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र में सामाजिक संदर्भ के अनुसार मानव व्यवहार के बारे में निष्कर्षों को देखने- समझने के लिए अपने खुद के अद्वितीय मानक हैं। उनके बीच की कुछ भिन्नताओं को आइए हम निम्नलिखित तालिका में देखते हैं

तालिका 1

	प्रत्यक्षवाद	व्याख्यात्मक
1	फ्रांसीसी समाजशास्त्री अगस्ट कॉम्टे और एमिल दर्खाइम द्वारा सकारात्मकतावाद की अवधारणा को विकसित किया गया जिसे प्राकृतिक अथवा तर्कसंगत विज्ञानों- भौतिकी अथवा रसायन विज्ञान के साथ जोड़ा गया।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र को जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर द्वारा शुरू किया गया और जॉर्ज सिमेल और दूसरे विद्वानों द्वारा विकसित किया।
2	प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र का उद्देश्य सामाजिक संस्थाओं को समझना है और वह भी अवलोकन एवं ज्ञान अथवा तथ्यों पर विश्वास करके।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का उद्देश्य अर्थ की प्रणाली के अंतर्गत विषय की स्थिति के माध्यम से क्रियाओं की पृष्ठभूमि के अर्थ को समझना है
3	प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र किसी वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को 'बाह्य रूप' में देखता है।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र वास्तविकता को किसी घटना के बारे में लोगों की अपनी समझ जिसका वे निर्माण करते हैं उस रूप में देखता है।
4	प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र मात्रात्मक तरीकों और ऑकड़ों का उपयोग करता है।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र गुणात्मक तरीकों और आंकड़े पर निर्भर करता है।

5.4 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की उत्पत्ति

5.4.1 मैक्स वेबर

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक जर्मन समाजशास्त्री, मैक्स वेबर (1864-1920) के योगदान में इस उपागम की उत्पत्ति अंतर्निहित है। वेबर की समाजशास्त्रीय लेखन की समृद्ध विरासत में धर्म के समाजशास्त्र के साथ ही समाज, अर्थशास्त्र, राजनीति एवं सरकार से संबन्धित रचनाएँ सम्मिलित हैं। वेबर के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट

ऑफ कैपिटलिज्म (1904) , द रिलिजन ऑफ इंडियाः द सोशियोलॉजी ऑफ हिंदूइज्म एंड बुद्धिज्म (1958) और इकोनॉमी एंड सोसाइटी (1978) सम्मिलित हैं। अनेक विषयों पर उन्होंने व्यापक रूप से लिखा है परंतु सामाजिक क्रिया और शक्ति तथा वर्चस्व की व्याख्यात्मक समाजशास्त्र विकसित करने पर उन्होंने अपना ध्यान अधिक केंद्रित किया है (ऍरोन, 1967; बेंडिक्स, 1960) । आधुनिक समाज में युक्तिकरण की प्रक्रिया और इस प्रक्रिया के संग दुनिया के विभिन्न धर्मों के अंतर-संबंध वेबर की दूसरी प्रमुख चिंता थी। सकारात्मकतावाद के साथ समझौता करने के प्रयास के रूप में समाजशास्त्र के प्रति उनके उपागम को देखा-समझा जा सकता है और इसका उद्देश्य वैज्ञानिक समाजशास्त्र का सृजन करना है (बिल्टन एट अल, 1981)। समाजशास्त्र को वेबर ने 'विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है जो सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ के रूप में देखता है ताकि उसकी प्रक्रिया और प्रभावों का एक अनियत स्पष्टीकरण प्राप्त हो सके' (वेबर, 1964: 88)। सामाजिक क्रिया को यहां पर पारस्परिक रूप से उन्मुख क्रिया के रूप में देखने-समझने की आवश्यकता है जिसे जानबूझकर, सार्थक और प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। समकालीन समाजशास्त्र के क्षेत्र में हम यह कह सकते हैं कि इस अवधारणा का अर्थ अंतःक्रिया से है।

इस इकाई में हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि वेबर ने एक महत्वपूर्ण सुव्यस्थित अवधारणा को शुरु किया जिसे वर्स्टेहन कहा जाता है जिसका तात्पर्य है अर्थ के स्तर पर जानना अथवा समझना। वेबर का यह मानना था कि इस पहलू से सामाजिक विज्ञानों को प्राकृतिक विज्ञानों का फायदा मिला। जहाँ प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र में हम केवल निरीक्षण और सामान्यीकरण कर सकते हैं वहीं सामाजिक विज्ञान क्षेत्र में हम कार्यों को समझ सकते हैं और कार्य करने वालों की व्यक्तिपरक उद्देश्य को भी जान सकते हैं (अब्राहम, 2015: 17)। फलस्वरूप यह दो प्रकार से सामाजिक व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन को अंजाम देता है: एक ओर यह हमें क्रियाओं के अर्थ को सीधे तौर पर देखने और समझने का अवसर प्रदान करता है तो दूसरी ओर यह अंतर्निहित उद्देश्य की समझ की सुविधा प्रदान करता है। जब कोई रसायनविद किसी विशेष पदार्थ के गुणों का अध्ययन करता है तो वह बाह्य तौर पर ऐसा अध्ययन करता है। जब कोई समाजशास्त्री मानव समाज और संस्कृति को जानने-समझने का प्रयास करता है तो वह इसे एक आंतरिक सूत्र अथवा प्रतिभागी के रूप में देखता है। एक इंसान होने के नाते सामाजिक वैज्ञानिक अपने विषय के उद्देश्यों एवं भावनाओं तक सुगमता से पहुंच पाते हैं। व्यक्तिपरक क्रिया की जांच करके सामाजिक वैज्ञानिक मानव क्रियाओं को समझ सकते हैं कि कार्य करने वाले अपने खुद के व्यवहार के साथ दूसरों के साथ भी जुड़ते हैं। इस प्रकार समाजशास्त्रीय ज्ञान और समझ दूसरे (प्राकृतिक) विज्ञानों से गुणात्मक रूप से अलग है।

वेबर इस बात का उल्लेख करते हैं कि कोई प्राकृतिक वैज्ञानिक बाहर से ही प्राकृतिक घटनाओं को समझता है। परंतु वर्स्टेन की विधि का इस्तेमाल करके समाजशास्त्री को वस्तुस्थिति की समझ द्वारा भावनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करते हुये कार्य करने वालों की प्रेरणाओं की कल्पना करनी चाहिए। हम इस बात को जान सकते हैं कि इस उपागम हेतु वेबर का योगदान सर्वोच्च था क्योंकि उन्होंने वैज्ञानिक समाजशास्त्रीय स्पष्टीकरण के साथ सामाजिक क्रियाओं की अवधारणा को जोड़ने की कोशिश की । यह सब केवल और केवल वर्स्टेन (व्याख्यात्मक समझ) के इस्तेमाल से संभव था। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाजशास्त्री कार्य करने वालों के लिए क्रियाओं के अर्थ तक पहुँचने की कोशिश करता है। वेबर के संदर्भ में क्रिया को व्यक्तिपरक सार्थक मानवीय व्यवहार के तौर पर परिभाषित किया गया है। वह कार्य करने वाले के मस्तिष्क में मौजूद 'उद्देश्य' पर भी बल देता है क्योंकि यह किसी भी क्रिया का 'कारण' होता है।

वेबर का यह तर्क है कि सामाजिक विज्ञान का समग्र उद्देश्य 'सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ' को विकसित करना होता है। चूंकि सामाजिक विज्ञान का मुख्य उद्देश्य सामाजिक क्रिया से जुड़ा हुआ है और चूंकि मानव क्रियाओं में आवश्यक रूप से व्यक्तिपरक अर्थ सम्मिलित होते हैं इसलिए सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में जांच के तरीके भी प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों से भिन्न होते हैं। वेबर के लिए सामाजिक क्रिया में सभी प्रकार के मानवीय व्यवहार सम्मलित थे जो सार्थक थे। अर्थात क्रिया जिससे कर्ता (कार्य करने वाला) अर्थ जुड़ा होता है। सामाजिक क्रिया का अध्ययन करते समय समाजशास्त्री का कार्य उस कार्य को करने वाले द्वारा निहित अर्थों की खोज करना था। इस कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से किसी समाजशास्त्री को कार्य करने वाले के स्थान पर खुद को रखना चाहिए , और कल्पना करना चाहिए कि वे अर्थ कौन से हैं अथवा हो सकते हैं जिन्हें एक संवेदनशील समझ के रूप में जाना जाता है।

इसके बारे में रेमंड ऍरोन (1967) निम्नलिखित उदाहरण के साथ चर्चा करते हैं : कोई इस बात को समझ सकता है कि ड्राइवर लाल बत्ती पर क्यों रुकता है। उसे यह देखने की आवश्यकता नहीं है कि ड्राइवर लाल बत्ती पर कितनी बार रुकते हैं जिससे वह इस बात को समझ सके कि ड्राइवर लोग ऐसा क्यों करते हैं। यह इसलिए है क्योंकि दूसरे लोगों के कार्यों का व्यक्तिपरक अर्थ आम तौर पर दैनिक जीवन में तुरंत व्यापक होता है (ऍरोन, 1971: 191)। इन्हीं बातों के चलते वेबर ने तर्क दिया कि सामाजिक विज्ञानों का समग्र उद्देश्य 'सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ' को विकसित करना है। वेबर इस बात को विकसित और व्यक्त करना चाहते थे कि यह विज्ञान इस प्रकार से प्राकृतिक विज्ञानों से बहुत भिन्न होता है जिसका उद्देश्य भौतिक संसार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से 'प्रकृति के नियमों' की पड़ताल करना है। उनका यह भी मानना था कि सामाजिक विज्ञान की प्राथमिक उद्देश्य सामाजिक क्रिया से संबन्धित है जिसमें व्यक्तिपरक अर्थ सम्मलित होते हैं। अतः सामाजिक विज्ञान के तरीके भी प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों से भिन्न होते हैं।

वेबर यह भी चाहते थे कि वे एक वैकल्पिक उपागम (सकारात्मकता हेतु) स्थापित करें जो व्यक्तिपरक अनुभव को समझने पर केंद्रित हो और जो मात्र अवलोकन या तथ्यों के अनुपालन पर आधारित न हो। परिणामस्वरूप कथित तथ्य जो सकारात्मकतावादी अवलोकन पद्धति में निहित होते हैं वे विभिन्न व्यक्तियों के उपागम से पूर्णहः नवीन अर्थ धारण कर सकते हैं। सांस्कृतिक और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में व्याख्या की भूमिका पर वेबर ने लगातार बल दिया। उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि सामाजिक वैज्ञानिकों को किसी समाज के 'नियमों' को समझने के लिए कभी भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए अपितु उन्हें सामाजिक अभिकर्ताओं के कार्यों और मान्यताओं की 'व्याख्या' और 'प्रतिपादन' करना चाहिए।

इस उपागम के दूसरे महत्वपूर्ण योगदानकर्ता जॉर्ज सिमेल हैं जो कि मैक्स वेबर के समकालीन थे। वह एक बहुत ही प्रसिद्ध प्रारंभिक समाजशास्त्री थे और उन्हें व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के एक प्रमुख प्रतिपादक के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। वेबर और सिमेल दोनों ने यह माना कि सभी सामाजिक घटनाओं पर नजर रखने में सकारात्मकतावादी उपागम सक्षम नहीं था और न ही यह उपागम सभी सामाजिक घटनाओं के बारे में इस बात को समझाने में सक्षम था कि आखिर सभी सामाजिक घटनाएं क्यों घटती हैं।

बोध प्रश्न 1

1) लगभग दो लाइनों में इस बात का वर्णन करें कि वर्स्टेहन का क्या अर्थ है ?

.....

.....

.....

.....

2) सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के बीच तीन भिन्नताओं का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

3) व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के क्षेत्र में मैक्स वेबर के योगदान के संबंध में लगभग पांच लाइनों में चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

5.5 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की शाखाएँ

सामाजिक निर्माणवादी उपागम की सामान्य श्रेणी के अंतर्गत व्याख्यात्मक उपागम ने समाजशास्त्र की विविध सैद्धांतिक परंपराओं को विकसित किया । उनमें से कुछ प्रमुख हैं- प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, नाट्य-शास्त्र, दृश्यप्रपंचशास्त्र और जातिप्रणालीविज्ञान। वास्तविकता संबंधी सामाजिक निर्माण की धारणा प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी उपागम के केंद्र में निहित होती है। दैनिक जीवन के अध्ययन का वर्णन करते हुए एंथोनी गिडेंस ने हमें यह बताया है कि मनुष्य वास्तविकता को आकार देने के लिए सृजनात्मक रूप से किस प्रकार कार्य कर सकता है और सामाजिक व्यवहार कुछ सीमा तक विभिन्न बलों जैसे कि भूमिका मानदंड और साझा अपेक्षाओं द्वारा निर्देशित होते हैं। वह हमें यह भी बताते हैं कि कोई व्यक्ति अपनी पृष्ठभूमि, रुचियों और प्रेरणाओं के अनुसार वास्तविकता को अलग अलग प्रकार से समझते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि वास्तविकता स्थिर या स्थायी नहीं है - वास्तविकता मानव अंतःक्रिया से बनती है। (गिडेंस, 2006: 130)।

वालेस और वुल्फ (1995: 183-184) यह सुझाव देते हैं कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य के अग्रणी और प्रत्यक्ष योगदानकर्ताओं में जॉर्ज सिमेल और रॉबर्ट पार्क का नाम सम्मिलित हैं। हालांकि सामाजिक जीवन को जानने- समझने के लिए मैक्स वेबर का योगदान और उनके द्वारा वर्स्टेहन (व्याख्यात्मक समझ अथवा व्यक्तिपरक अर्थ) पर बल देना अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसने वेबर की 'लघु' और 'सूक्ष्म' परिप्रेक्ष्य को कम करने की क्षमता को भी दिखाया। निम्नलिखित उप-शीर्षकों के अंतर्गत अंतःक्रियात्मक उपागम के बारे में संक्षिप्त चर्चा की जाएगी, ताकि इस बात को समझा जा सके कि ये सैद्धांतिक परंपराएं

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के लिए किस प्रकार और क्यों अभिन्न हैं। आइए इसकी शुरुआत हम प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद से करते हैं।

5.5.1 प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद उत्तरी अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों में से एक है। इसकी जड़ें दार्शनिक जॉर्ज हर्बर्ट मीड तक जाती हैं। इस परिप्रेक्ष्य को विकसित करने वाले समाजशास्त्रियों में हर्बर्ट ब्लूमर और इरविंग गोफमैन का नाम सम्मिलित है। इस परिप्रेक्ष्य के संस्थापक-जनक के रूप में जॉर्ज हर्बर्ट मीड का नाम प्रसिद्ध है, हालाँकि इस परिप्रेक्ष्य को उनके शिष्य हर्बर्ट ब्लूमर द्वारा नाम दिया गया और लोकप्रिय बनाया गया। हालांकि प्रतीकात्मक अंतःक्रियात्मक उपागम सामान्य रूप से मीड से संबन्धित है। वह हर्बर्ट ब्लूमर ही थे जिन्होंने मीड के विचारों को आत्मसात किया और उन्हें अधिक व्यवस्थित समाजशास्त्रीय उपागम के रूप में विकसित किया। ब्लूमर ने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद अवधारणा को सृजित किया। आम तौर पर ब्लूमेरियन प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद को 'शिकागो स्कूल ऑफ सिंबोलिक इंटरेक्शनिज्म' के नाम से जाना जाता है।

कुछ प्रमुख विशेषताओं में अंतःक्रियाओं का अध्ययन, क्रिया की व्याख्या और खुद का सामाजिक निर्माण सम्मिलित है। एम फ्रांसिस अब्राहम (2015) का यह कहना है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद एक प्रकार से सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य है जो विशिष्ट तौर पर समाजशास्त्र के लिए प्रासंगिक है। अमूर्त सामाजिक संरचनाओं अथवा व्यक्तिगत व्यवहार के ठोस रूपों का सामना करने के स्थान पर प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में वार्तालाप की प्रकृति, सामाजिक क्रिया और सामाजिक संबंधों के पैटर्न पर बल दिया जाता है (अब्राहम, 2015: 36)।

5.5.1.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड का योगदान

जॉर्ज हर्बर्ट मीड के अनुसार समाजीकरण इस बात पर निर्भर करता है कि किसी बच्चे के जीवन में दूसरों के विचारों के प्रति कैसी समझ है। मीड (1972) खुद के विकास में दो चरणों पर बल देते हैं : स्वयं के विकास में 'खेल' और 'क्रीड़ा' के चरण महत्वपूर्ण होते हैं। सबसे अहम बात यह है कि दोनों चरण अंतःक्रिया पैटर्न पर निर्भर हैं। मीड का यह कहना है कि, 'खेल' के चरण में बच्चा किसी व्यक्ति और पशुओं कि उन भूमिकाओं को निभाता है जो किसी न किसी रूप में उसके जीवन में घर कर जाती हैं। हालांकि खेल के चरण में कोई व्यक्ति सभी रूप धारण कर लेता है जो दूसरों द्वारा किया जाता है - किसी की भूमिका के सफलतापूर्वक निर्वहन के लिए स्वयं की पूरी संगठित गतिविधि का होना जरूरी है। यहाँ किसी व्यक्ति ने न केवल कोई विशिष्ट दूसरी भूमिका निभाई है अपितु सामान्य गतिविधि में भाग लेने वाले किसी दूसरे व्यक्ति की भांति कार्य किया है और उसने भूमिका-निर्वहन के उपागम को सामान्यीकृत किया है (मीड, 1972: xxiv)।

बॉक्स 2

'स्वयं' के विकास संबन्धित मीड का उदाहरण

बच्चों का खेल धीरे-धीरे सरल अनुकरण से होता हुआ कठीन खेलों तक विकसित होता है जहां पर चार-पांच साल का बच्चा किसी वयस्क की भूमिका का निर्वहन करेगा। उदाहरण स्वरूप बच्चों को आम तौर पर कक्षा की स्थिति का अनुकरण करते हुए देखा जाता है जहां पर कोई बच्चा शिक्षक बन जाता है तो दूसरे बच्चे छात्र बन जाते हैं और वे कक्षा शिक्षण सत्र की भूमिका निभाने का नाटक करते हैं। अधिकतर बच्चे स्थानीय तौर पर इस नाटक को 'शिक्षक-शिक्षक' के नाम से जानते हैं।

इस प्रकार का एक और नाटक 'डॉक्टर और मरीज' का है जहाँ बच्चे डॉक्टर, नर्स और मरीज की भूमिका का अनुकरण करते हैं और ऐसी स्थिति को दिखाने का प्रयास करते हैं जहाँ कोई मरीज इलाज हेतु किसी डॉक्टर के पास जाता है।

इस प्रकार मीड ने 'सामान्यीकृत अन्य' और 'महत्वपूर्ण दूसरे' की अवधारणाओं को प्रस्तुत किया है। 'सामान्यीकृत दूसरे' को किसी विशेष समूह की संस्कृति के उन नियमों और मूल्यों के तौर पर जाना-समझा जा सकता है जिसमें बच्चे सम्मलित हुए हैं। 'सामान्यीकृत दूसरे' को समझने के माध्यम से बच्चा यह समझने में सक्षम होता है कि किसी भी समाज में किस तरह के शिष्टाचार की अपेक्षा होती है। 'महत्वपूर्ण दूसरे' में उन व्यक्तियों को सम्मलित किया जाता है जो कि बच्चे के जीवन में महत्व रखते हैं और बच्चे की भावनाओं और व्यवहारों को खुद अपनी भूमिका से प्रभावित करते हैं। इसलिए जहाँ मीड ने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद की नींव रखी उनके शिष्य हर्बर्ट ब्लूमर ने इस उपागम को प्रसिद्धि प्रदान की। आइए निम्नलिखित पैराग्राफ के माध्यम से उनके योगदानों पर विस्तार से विचार करते हैं।

5.5.1.2 हर्बर्ट ब्लूमर का योगदान

हर्बर्ट ब्लूमर (1969) का यह सुझाव है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद तीन मुख्य बातों पर आधारित है। सर्व प्रथम यह है कि मनुष्य वस्तुओं के उन अर्थ के आधार पर कार्य करता है जो अर्थ वह उन चीजों या वस्तुओं से ग्रहण करता हैं। पेड़ या कुर्सियाँ या मनुष्यों जैसे मित्र या शत्रु, या यहाँ तक कि स्कूल या सरकारी भवन जैसी संस्थाएँ जो कि अपने आप में भौतिक वस्तुएँ ऐसी चीजों में सम्मिलित हो सकती हैं। इसका दूसरा आधार यह है कि ऐसी बातों का अर्थ सामाजिक मेल मिलाप से ग्रहण किया जाता है जो किसी की संगति से मिल सकता है। तीसरा आधार यह है कि इन अर्थों को व्याख्यात्मक प्रक्रिया द्वारा संशोधित किया जाता है जो कोई व्यक्ति किसी वस्तु से व्यवहार के अंतर्गत प्रयोग की जाती है। (ब्लूमर, 1969: 2)। इसलिए प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का अर्थ है कि केवल दो प्रमुख विचारों से निकलने वाले अर्थ से है जिसके अलग स्रोत हों। इसके स्थान पर यह लोगों के बीच वार्तालाप की प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाले अर्थ को देखता है।

यहाँ पर संक्षेप में ब्लूमर के उपागम के मूल को उनके तीन प्रस्तावों में समाहित किया जा सकता हैः पहला यह है कि मनुष्य दूसरे लोगों और चीजों के अनुरूप कार्य करता है जो अर्थ उन लोगों या चीजों को दिया जाता है। दूसरी बात यह है कि भाषा मनुष्य को एक ऐसा साधन प्रदान करती है जिसके द्वारा प्रतीकों के माध्यम से अर्थ के बारे में वार्तालाप की जाती है। तीसरी बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के विचार प्रतीकों की व्याख्या को संशोधित करते हैं। लोग इस प्रकार अपने जीवन अनुभवों और दृष्टिकोणों के आधार पर स्थितियों को विभिन्न तरीकों से परिभाषित करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों हेतु व्याख्या बहुत अहम है।

अतः ब्लूमर ने यह कहा कि हम सामाजिक वार्तालाप के सबसे मर्मज्ञ विश्लेषण हेतु जॉर्ज हर्बर्ट मीड के ऋणी हैं। जहां मीड ने मानव समाज में सामाजिक वार्तालाप के दो रूपों या स्तरों की पहचान की है जिसे वह 'इशारों का वार्तालाप' और 'महत्वपूर्ण प्रतीकों का उपयोग' के रूप में संदर्भित करते हैं वहीं ब्लूमर इन अवधारनाओं को 'गैर-प्रतीकात्मक वार्तालाप' और 'प्रतीकात्मक वार्तालाप' के रूप में जानते-समझते हैं। इसके आगे ब्लूमर यह कहते हैं कि 'गैर-प्रतीकात्मक वार्तालाप' तब होता है जब कोई उस क्रिया की व्याख्या किए बिना दूसरे की क्रिया पर सीधे प्रतिक्रिया करता है; जबकि, 'प्रतीकात्मक वार्तालाप' में किसी क्रिया की व्याख्या सम्मिलित होती है। आइए इस बात को एक उदाहरण की सहायता से समझते हैं। ब्लूमर का यह सुझाव है कि 'गैर-प्रतीकात्मक अंतःक्रिया' को रिफ्लेक्स प्रतिक्रियाओं में देखा

जा सकता है। उदाहरण स्वरूप कोई मुक्केबाज के मामले में जो स्वतः ही झटका देने हेतु अपनी बांह को ऊपर उठा लेता है। हालाँकि, यदि मुक्केबाज अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर से आने वाले झटके को पहचानने के लिए एक फैंट के रूप में प्रतिबिंबित करता है, तो वह प्रतीकात्मक वार्तालाप में उलझा रहेगा (ब्लूमर, 1969: 8-9)। इस प्रकार अधिक महत्वपूर्ण बात और वेबर के सिधान्त पर आने से हम समझ सकते हैं कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसमें प्रतिबिंब और क्रिया की व्याख्या सम्मिलित है।

5.5.2 नाट्य-शास्त्र

ब्लूमर के प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी उपागम को लोकप्रिय बनाने के अतिरिक्त इस परिप्रेक्ष्य में एक दूसरे प्रमुख योगदानकर्ता इरविंग गोफमैन थे। उन्होंने एक विशेष प्रकार के अंतःक्रियावादी पद्धति को नाटकीय उपागम के रूप में लोकप्रिय बना कर विशिष्ट योगदान दिया। व्याख्यात्मक उपागम से ही नाटकीय उपागम भी निकला है और यह रोजमर्रा के जीवन की तुलना में किसी नाटक की स्थापना – किसी रंगमंच या किसी मंच से करता है। एम फ्रांसिस अब्राहम का यह कहना है कि, ''नाट्यशास्त्रीय उपागम सामाजिक वार्तालाप का अध्ययन है क्योंकि प्रतिभागी किसी नाटक में पात्र होते हैं .... इसलिए सामाजिक व्यवहार मंचित नाटक के अनुरूप हो जाता है (अब्राहम, 2015: 98)।

गोफमैन द्वारा प्रसिद्ध यह उपागम निम्नलिखित बातों पर आधारित है। जिस प्रकार पात्र हमारे सामने कार्य करते हैं और जिस प्रकार वे हमारे समक्ष कुछ दृश्य या चित्र पेश करते हैं, वैसे ही हम लोग भी बाहरी दुनिया के समक्ष अपने व्यक्तित्व के कुछ गुणों को प्रस्तुत करना पसंद करते हैं; और साथ ही हम उनमें से कुछ को छिपाना भी पसंद करते हैं।

बॉक्स 3

उदाहरण

हमें क्लास अथवा परीक्षा के दौरान एक गंभीर छवि बनाने की आवश्यकता महसूस हो सकती है; इसके विपरीत हालांकि किसी पार्टी में आराम करना और दूसरों को खुश करने के लिए गंभीर नहीं दिखना महत्वपूर्ण हो सकता है।

उदाहरण (बॉक्स 3) इस बात का उल्लेख करता है कि गोफमैन का मुख्य उद्देश्य इंप्रेशन प्रबंधन की प्रक्रिया को समझने में रहा है। इसलिए व्यक्ति न केवल खुद को एक-दूसरे के समक्ष प्रस्तुत करने योग्य तरीके से पेश करते हैं, अपितु वे उस छवि का प्रबंधन करने की भी कोशिश करते हैं जिसे वे प्रस्तुत करते हैं। यह पहलू नाटकीयता को एक महत्वपूर्ण आयाम प्रदान करता है। इसी कारण इसका मानना है कि 'सारी दुनिया एक रंगमंच है' और लोग परस्पर क्रियाओं का सामना करने हेतु अपने कृत्यों का प्रबंधन करते हैं। यह क्रिया के नजरिए को भी एक प्रकार से जटिल आयाम प्रदान करता है। जैसा कि वेबर ने अर्थ की अवधारणा को स्थापित किया है और यदि हम क्रियाओं के अर्थों को समझते हैं तो यह आवश्यक है कि किसी व्यक्ति को प्रभाव प्रबंधन के कार्य में शामिल किया जाए या नहीं, इस बात की जांच करने हेतु वार्तालाप के दौरान पूर्ण रूपेण खुद को सम्मिलित किया जाए।

अतः बिल्टन एट अल (1981) का यह सुझाव है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी उपागम क्रिया परिप्रेक्ष्य के रूप में विशेष रूप से लघु सतर पर वार्तालाप, व्यक्तित्व विकास और विचलित व्यवहार के अध्ययन में व्यापक रूप से प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। मीड का कार्य जैविक और सहज तत्वों के बहिष्कार के लिए स्वयं के सामाजिक निर्माण पर बल देता है। गोफमैन की रचना अस्यलूम्स (1961) इस परिप्रेक्ष्य को अपनाने वाला एक क्लासिक अध्ययन है जिसमें वह मानसिक रोगियों और अन्य कैदियों के कैरियर और सामाजिक

स्थिति को उनके संबंधित संस्थानों में देखते हैं। इसलिए व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के संबंध में प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के महत्व को समझने वाली कड़ी दृश्य प्रपंच शास्त्र और जाति प्रणालीविज्ञान को हम यहाँ पर आगे देखेंगे।

5.5.3 दृश्य प्रपंच शास्त्र

दृश्यप्रपंच शास्त्र समाजशास्त्र काफी हद तक अल्फ्रेड शुट्ज के कार्यों से विकसित हो पाया जिन्हें द फेनोमेनोलॉजी ऑफ द सोशल वर्ल्ड (1967) के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। शुट्ज का यह सुझाव है कि क्रिया के दौरान हम समाज के बारे में धारणाओं को काम में लेते हैं कि यह किस प्रकार कार्य करता है और हम दूसरों की क्रिया की भविष्यवाणी करने के लिए कच्चे रास्ते में वर्स्टेहन का इस्तेमाल करते हैं। परिणामस्वरूप, हमारे कार्य 'सार्थक' होते हैं, क्योंकि हमारा कोई विशेष उद्देश्य या उद्देश्य नहीं होता है, परंतु दूसरा पात्र प्रतीकात्मक महत्व रखते हुए हमारी क्रिया की व्याख्या करते हैं। यह कहा जाता है कि घटनात्मक उपागम व्याख्यात्मक उपागम का रूप धरण कर लेता है जिसे प्रारम्भ में मैक्स वेबर द्वारा और तदुपरान्त दूसरे विचारकों द्वारा चरम स्तर तक विकसित किया गया।

इसके अतिरिक्त यह परिप्रेक्ष्य आगे बताता है कि हमारी वास्तविकता में सिर्फ अर्थ होते हैं; इसलिए समाजशास्त्री का काम क्रियाओं और व्यवहार के अर्थों की जांच करना है और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। इस उपागम को प्रसिद्ध करने के लिए शुट्ज ने मैक्स वेबर की कार्यप्रणाली की आलोचना करने हेतु एडमंड हसेरेल के दर्शन का उपयोग किया। उन्होंने सामाजिक क्रिया की प्रकृति के कट्टरपंथ के निर्माण के लिए ऐसा किया। शुत्ज के अनुसार वेबर किसी भी वास्तविक बात को प्रस्तुत करने में विफल रहे जिसमें सामाजिक अवधारणाओं, प्रतीकों और अर्थों के साझा सेट के आधार पर कार्यों को सृजित किया जा सकता है।

ठोस सामाजिक अस्तित्व की औपचारिक संरचनाओं का अध्ययन दृश्य प्रपंच शास्त्र समाजशास्त्र है जो कि सोचे समझे कृत्यों के विश्लेषणात्मक विवरण के माध्यम से उपलब्ध किया जाता है। ऐसे विश्लेषण का ध्यय रोजमर्रा जीवन अथवा 'जीवन-जगत' की सार्थक जीवंत दुनिया-संसार है। बिल्टन एट अल (1981: 739-40) का यह सुझाव है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों ने साझा परिभाषाओं को अंगीकार किया और भाषा के सहारे प्रतीकात्मक संचार पर बल दिया। इसी कारण शुत्ज ने मूलभूत रूप से यह सुझाव देने के उद्देश्य से इस परिप्रेक्ष्य को विकसित किया कि हम सभी लोग उसी स्थिति में सफलतापूर्वक कार्य करते हैं जब हम सभी लोग एक समान अर्थों को साझा करते हैं। इस उपागम को इस प्रकार हम अनेक विधियों से व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के पारंपरिक मॉडल से विचलन के रूप में समझ सकते हैं।

वेबर की भांति शुत्ज का यह मानना था कि सामाजिक अनुसंधान भौतिक विज्ञानों के अनुसंधान से भिन्न होता है और लोग दुनिया-संसार को समझने में संलग्न होते हैं। दूसरे मित्रों के संग वार्तालाप करते हुए हम उनकी समझदारी को समझने का प्रयास कर रहे हैं। वह गुण जो सामाजिक विज्ञानों को दूसरों से अलग करता हैं वह यह है कि सामाजिक वैज्ञानिक असंतुष्ट पर्यवेक्षक की भूमिका में रहते हैं। सामाजिक वैज्ञानिक प्रेक्षण किए जा रहे लोगों के जीवन में शामिल नहीं होते हैं - उनकी गतिविधियां किसी भी व्यावहारिक स्वार्थ से नहीं जुड़ी होती हैं अपितु उनकी गतिविधियों का संबंध केवल संज्ञानात्मक अभिरुचि से होता है। वेबरियन मॉडल के विपरीत यहां पर साझा अर्थ और सामान्य ज्ञान को महता प्राप्त होती है जिसमें केवल व्यक्तिपरक अनुभवों को मुख्य रूप से महत्व दिया जाता है।

5.5.4 जाति प्रणाली विज्ञान

इस अंतिम उप-भाग के अंतर्गत हम जाति प्रणाली विज्ञान संबंधी उपागम के बारे में चर्चा करेंगे। हालांकि जातिप्रणाली विज्ञान अवधारणा वृहत और भ्रामक प्रतीत होती है परंतु एक बार जब हम इस अवधारणा को दो भागों में विभाजित कर देते हैं तो अर्थ अत्यंत आसान हो जाता है। हेरोल्ड गार्फिंकल द्वारा जाति प्रणाली विज्ञान अवधारणा को बनाया गया जिन्हें उनकी कृति स्टडीस इन एथेनोमेथोडोलॉजी (1967) के लिए जाना जाता है। 'एथनो' समाज के सदस्यों हेतु मौजूदा सामान्य ज्ञान के भंडार को संदर्भित करता है; और 'मेथोडोलॉजी' उन रणनीतियों को संदर्भित करता है जिनको कर्ता अपने अर्थों को समझने योग्य बनाने के लिए विभिन्न सेटिंग्स में उपयोग करते हैं। समाजशास्त्र के अंतर्गत जाति प्रणाली विज्ञान एक उपागम है जो लोगों को उनके रोजमर्रा के संसार को समझने की विधि पर प्रकाश डालता है। इस बारे में गार्फिंकेल का यह मानना है कि "जाति प्रणाली विज्ञान संबंधी अध्ययन रोजमर्रा की उन गतिविधियों का विश्लेषण करता है जो सदस्यों के लिए सभी गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से तर्कसंगत और व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए कारगर बनाता हो। (गार्फिंकेल, 1967: vii)।

लोगों को तर्कसंगत कर्ताओं के रूप में देखा जाता है परंतु समाज में कार्य करने और अर्थ को संदर्भित करने हेतु औपचारिक तर्क के स्थान पर व्यावहारिक तर्क का प्रयोग किया जाता है। यह उन तरीकों के विश्लेषण के बारे में बताता है जिनको हम सक्रिय रूप से समझ लेते हैं कि दूसरों के कहने और करने का क्या तात्पर्य है। प्रत्येक दिन का हाम्रा अधिकांश समय दूसरों के साथ अनौपचारिक वार्तालाप में व्यतीत होता है। गार्फिंकेल ने इन वार्तालाप का विश्लेषण किया। उन्होंने इस बात को दर्शाया है कि किस प्रकार ये वार्तालाप साझी समझ और ज्ञान पर आधारित होते हैं। वह इस साझी समझ और ज्ञान को 'पृष्ठभूमि की अपेक्षाओं' के रूप में संदर्भित करते हैं। इस सिद्धांत का यह तर्क है कि मानव समाज जानकारी और समझ को अर्जित करने एवं उसे प्रदर्शित करने के लिए इन तरीकों पर पूरी तरह से निर्भर है।

हालांकि इस उपागम को गार्फिंकेल द्वारा विकसित किया गया परंतु यह शुत्ज के मैक्स वेबर के व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के दृश्य प्रपंच शास्त्र पुनर्निर्माण पर आधारित है। बिल्टन एट अल (1981) ने यह माना है कि एथ्नोमेथोडोलॉजिस्ट शुत्ज के इस दावे के आधार पर काम करते हैं कि सामाजिक संसार का सृजन और पुनर्सृजन कर्ताओं के व्यावहारिक कार्यों द्वारा किया जाता है जो कि मान्यताओं पर आधारित होते हैं। अतः सबसे अहम बात यह है कि जातिप्रणाली विज्ञान की जड़ें प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और दृश्यप्रपंच शास्त्र के संलयन में अंतर्निहित हैं।

बोध प्रश्न 2

1) लगभग दो पंक्तियों में इस बात का वर्णन करें कि नाट्य-शास्त्र से क्या तात्पर्य होता है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद की तीन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

3) दृश्य प्रपंच शास्त्र के बारे में अल्फ्रेड शुत्ज के योगदान के संबंध में तीन पंक्तियों में चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

5.6 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाएँ

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की अनेक सीमाएँ होती हैं। इनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं:

- यह संभव होता है कि अवलोकन व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से प्रभावित हो।
- प्रत्यक्ष अवलोकन में जिस संस्कृति का अध्ययन किया जा रहा हो उसके बारे में पूर्व ज्ञान की भी जरूरत होती है।
- यह माना जाता है कि समाज में लोग अपने कार्यों को तर्कसंगत मानते हैं जो कि सदैव ऐसा नहीं हो सकता।
- कार्यों को अपर्याप्त माना जाता है क्योंकि कार्य सदैव व्यक्तिवादी होते हैं।

5.7 सारांश

व्याख्यात्मक सिद्धांत स्वतंत्र इच्छा की अत्यधिक स्वीकार्यता है और यह मानव व्यवहार को पर्यावरण की व्यक्तिपरक व्याख्या के परिणाम के रूप में देखता है। व्याख्यात्मक सिद्धांत कर्ता की उस स्थिति पर अधिक बल देता है जिसमें वे कार्य करते हैं। हालाँकि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का प्रादुर्भाव मैक्स वेबर के इस दावे से हुआ है कि व्यक्ति अपने दुनिया-संसार के अर्थ संबंधी खुद की व्याख्या के अनुरूप कार्य करते हैं पर अमेरिकी दार्शनिक जॉर्ज हर्बर्ट मीड ने इस परिप्रेक्ष्य को अमेरिकी समाजशास्त्र से रूबरू करवाया। समाजशास्त्रीय सिद्धांत की प्रमुख अवसंरचना प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद है। यह परिप्रेक्ष्य प्रतीकात्मक अर्थ पर इसलिए निर्भर है क्योंकि सामाजिक वार्तालाप की प्रक्रिया में लोगों के अर्थ विकसित होते हैं और वे उन पर विश्वास करते हैं। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद उपागम का मुख्य ध्यय वास्तविकता के सामाजिक निर्माण की धारणा होती है।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इसे आम तौर पर 'समझ' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि वेरस्टेन (जर्मन शब्द जिसका अर्थ है 'मानव व्यवहार की सहानुभूतिपूर्ण समझ')अवधारणा में

निहित है। यह एक उपागम है जो सामाजिक व्यवहार और अंतःक्रिया का अध्ययन करते समय अर्थ और क्रिया के महत्व को केंद्र में रखता है।

2) फ्रांसीसी समाजशास्त्री अगस्ट कॉम्टे और एमिल दर्खाइम द्वारा सकारात्मकतावाद की अवधारणा को विकसित किया गया जिसे प्राकृतिक अथवा तर्कसंगत विज्ञानों- भौतिकी अथवा रसायन विज्ञान के साथ जोड़ा गया। व्याख्यात्मक समाजशास्त्र जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर के काम के माध्यम से विकसित हुआ। सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र का उद्देश्य सामाजिक संस्थाओं को समझना है और वह भी अवलोकन एवं ज्ञान अथवा तथ्यों पर विश्वास करके। दूसरी ओर, व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का उद्देश्य अर्थ की प्रणाली के अंतर्गत विषय की स्थिति के माध्यम से क्रियाओं की पृष्ठभूमि के अर्थ को समझना है।

सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र किसी वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को 'बाह्य रूप' में देखता है। दूसरी ओर, व्याख्यात्मक समाजशास्त्र वास्तविकता को किसी घटना के बारे में लोगों की अपनी समझ जिसका वे निर्माण करते हैं उस रूप में देखता है।

3) वेबर का यह मानना था कि इस पहलू से सामाजिक विज्ञानों को प्राकृतिक विज्ञानों का फायदा मिला। वेबर इस बात का उल्लेख करते हैं कि कोई प्राकृतिक वैज्ञानिक बाहर से ही प्राकृतिक घटनाओं को समझता है। परंतु वर्स्टेन की विधि का इस्तेमाल करके समाजशास्त्री को वस्तुस्थिति की समझ द्वारा भावनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करते हुये कार्य करने वालों की प्रेरणाओं की कल्पना करनी चाहिए। हम इस बात को जान सकते हैं कि इस उपागम हेतु वेबर का योगदान सर्वोच्च था क्योंकि उन्होंने वैज्ञानिक समाजशास्त्रीय स्पष्टीकरण के साथ सामाजिक क्रियाओं की अवधारणा को जोड़ने की कोशिश की । यह सब केवल और केवल वर्स्टेन (व्याख्यात्मक समझ) के इस्तेमाल से संभव था।

बोध प्रश्न 2

1) इरविंग गोफमैन द्वारा प्रसिद्ध यह उपागम निम्नलिखित बातों पर आधारित है। जिस प्रकार पात्र हमारे सामने कार्य करते हैं और जिस प्रकार वे हमारे समक्ष कुछ दृश्य या चित्र पेश करते हैं, वैसे ही हम लोग भी बाहरी दुनिया के समक्ष अपने व्यक्तित्व के कुछ गुणों को प्रस्तुत करना पसंद करते हैं; और साथ ही हम उनमें से कुछ को छिपाना भी पसंद करते हैं।

2) जबकि प्रतीकात्मक अंतःक्रियात्मक उपागम सामान्य रूप से मीड से संबन्धित है। वह हर्बर्ट ब्लूमर ही थे जिन्होंने मीड के विचारों को आत्मसात किया और उन्हें अधिक व्यवस्थित समाजशास्त्रीय उपागम के रूप में विकसित किया।

अमूर्त सामाजिक संरचनाओं अथवा व्यक्तिगत व्यवहार के ठोस रूपों का सामना करने के स्थान पर प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में वार्तालाप की प्रकृति, सामाजिक क्रिया और सामाजिक संबंधों के पैटर्न पर बल दिया जाता है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों के लिए व्याख्या विश्लेषण का प्रमुख उपकरण है।

3) दृश्य प्रपंच शास्त्र समाजशास्त्र काफी हद तक अल्फ्रेड शुट्ज के कार्यों से विकसित हो पाया जिन्हें द फेनोमेनोलॉजी ऑफ द सोशल वर्ल्ड (1967) के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। शुट्ज का यह सुझाव है कि क्रिया के दौरान हम समाज के बारे में धारणाओं को काम में लेते हैं कि यह किस प्रकार कार्य करता है और हम दूसरों की क्रिया की भविष्यवाणी करने के लिए कच्चे रास्ते में वर्स्टेन का इस्तेमाल करते हैं।

परिणामस्वरूप, हमारे कार्य 'सार्थक' होते हैं, क्योंकि हमारा कोई विशेष उद्देश्य या उद्देश्य नहीं होता है, परंतु दूसरा पात्र प्रतीकात्मक महत्व रखते हुए हमारी क्रिया की व्याख्या करते हैं।

5.9 संदर्भ

अब्राहम, एम फ्रांसिस (2015)। कनटेपोरारी सोशियोलॉजी : एन इंट्रोडकशन टु कांसेप्ट एंड थेओरीस (द्वितीय संस्करण)।नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

घ्रोन, रेमंड। (1967)। मेन करेंट्स इन सोशियोलॉजीकल थॉटस (खंड 2)। लंदनः पेंगुइन बुक्स।

बेंडिक्स, रेनहार्ड। (1960)। मैक्स वेबरः एन इंटीलेलेक्चुयल पोर्ट्रेट। न्यूयॉर्कः एंकर।

बिल्टन, टोनी, बोनट, केविन, जोन्स, फिलिप और अन्य. 1981. इंट्रोडकट्री सोशियोलॉजी। लंदनः द मैकमिलन प्रेस लिमिटेड।

ब्लूमर, हर्बर्ट। (1969)। सिंबोलीक इंट्रैक्शन : पेर्सपेक्टिव एंड मेथड।बर्कले, सी एः यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

गार्फिंकेल, हेरोल्ड। (1967)। स्टडीस इन एथनोमेथडोलोजी। न्यू जर्सीः प्रेंटिस हॉल।

गिडेंस एंथोनी। (2006)। सोशियोलॉजी (पांचवां संस्करण)। कैम्ब्रिजः पॉलिटी प्रेस।

मीड, जॉर्ज हर्बर्ट। (1972)। माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटीरू फ्रोम द स्टैंडपॉइंट ऑफ ए सोशल बिहेवीओरिस्ट। शिकागोः शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस।

वालेस, रूथ ए और वुल्फ, एलिसन (1995)। कनटेपोरारी सोशियोलॉजीकल थियरि (चौथा संस्करण)। न्यू जसीर्रू प्रेंटिस हॉल।

वेबर, मैक्स (1964)। द थियरि ऑफ सोशल एंड इकनॉमिक ऑर्गनाइजेशन।न्यूयॉर्कः फ्री प्रेस।

वेबर, मैक्स। (1968)। इकॉनमी एंड सोसाइटी : एन आउटलाइन ऑफ इंटरप्रेटिव सोशियोलॉजी।बर्कले, सी ए : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।